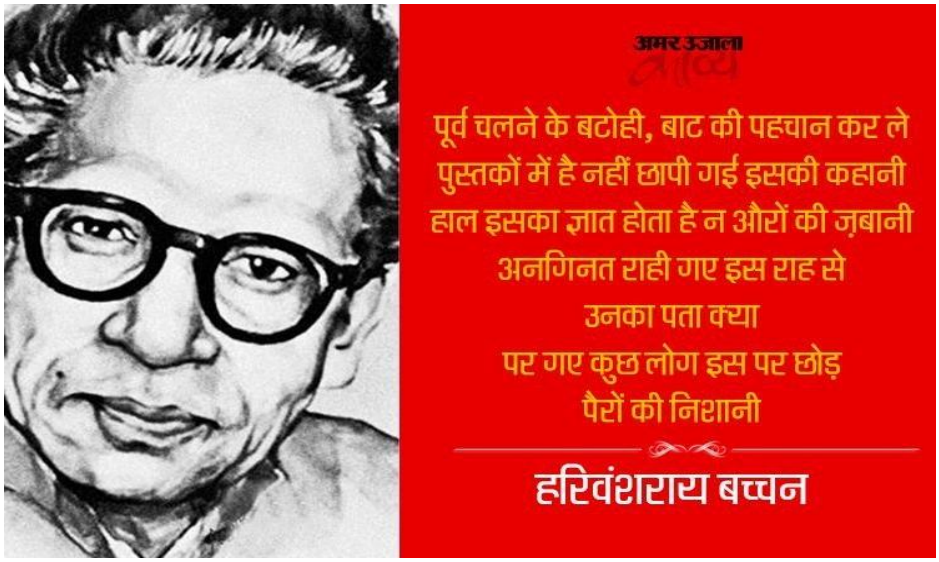

आत्मपरिचय-

श्री हरिवंश राय बच्चन

मैं यौवन का उन्माद लिए फिरता हूँ,
उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हुँ;
जो मुझको बाहर हँसा, रुलाती भीतर,
मैं, हाय, किसी की याद लिए फिरता हूँ !

कर यत्न मिटे सब, सत्य किसी ने जाना?
नादान वहीं हैं, हाय, जहाँ पर दाना!
फिर मूढ़ न क्या जग, जो इस पर भी सीखे?
मैं सीख रहा हूँ, सीखा ज्ञान भुलाना !

शब्दार्थ : यौवन = जवानी। उन्माद = पागलपन। अवसाद = उदासी, खेद। यत्न = प्रयास। नादान = नासमझ, अनाड़ी। दाना = लोभ ,भोग की सामग्री । मूढ़ = मूर्ख।

व्याख्या : कवि कहते हैं कि वे अपने अंदर युवावस्था की जो विशेष उमंग होती है, उसे सदैव ही साथ लिये रहते हैं। पर उमंग में भी प्रेम की उदासियां हैं। इसके कारण वे दुनिया को दिखाने के लिये खुश रहा करते हैं, परंतु अंदर ही अंदर रोया करते हैं। इसका कारण है कि उनके हृदय में किसी प्रियजन की स्मृतियां बसी हुई हैं।

वे कहते हैं कि इस संसार में जीवन के सत्य को जानने की कोशिशें कर के लोग मिट गये, परंतु कोई भी सत्य को नहीं जान सका। सत्य को न जान पाने के कारन ही लोग मूर्खता के काम कर रहे हैं।जिसे जहां कही भी धन वैभव दिखता है वह वही दाना के लोभ मे वयाकुल हो जाता है। मै इस नादानी को समझ चुका हु। इसीलिये मै जो ज्ञान पा चुका हूं उसे भी भुला देना चाहता हूं।

2. 'उन्मादों में अवसाद', 'बाहर हंसा, रुलाती अंदर', 'नादान वहीं हैं, हाय, जहाँ पर दाना!' और 'मैं सीख रहा हुँ, सीखा ज्ञान भुलाना!' में विरोधाभास अलंकार है।

विरोधाभास अलंकार किसे कहते हैं? विरोधाभास अलंकार वहां होता है, जहां पर एक साथ दो परस्पर विरोधी विचार व्यक्त किये गये हों।

3 भाषा में लालित्य और गीतात्मकता है।

4 'कर यत्न मिटे सब, सत्य किसी ने जाना?' में दार्शनिक भाव सूक्ति बनकर आया है।

विषेश : काव्यांश में कवि के दार्शनिक भाव अभिव्यक्त हुए हैं। वे इस सत्य का उद्घाटन करते हैं कि जो ज्ञानी हैं, असल में वही सबसे बड़े नादान लोग हैं।

प्रश्न : (क) 'यौवन का उन्माद' का तात्पर्य बताइए।

प्रश्न: (ख) कवि की मनःस्थिति कैसी है?

प्रश्न: (ग) 'नादान' कौन है तथा क्यों?

प्रश्न : (घ) संसार के बारे में कवि क्या कह रहा हैं?

प्रश्न : (ड) कवि सीखे ज्ञान की क्यों भुला रहा है?

शेष अगली कक्षा में

ऋचा पाण्डेय

धन्यवाद

वर्तनी का विशेष ध्यान रखें